कथक (उत्तर भारत)

कथक (उत्तर भारत)

- इसका नाम 'कथिका' से लिया गया है
- उत्पत्ति: ब्रजभूमि की रासलीला
  - संगीत, नृत्य तथा कथा का संयुक्त रूप
  - मंदिर या गाँव की प्रस्तुति।
- कथक में राधा-कृष्ण की विषयवस्तु बहुत लोकप्रिय है।
- शास्त्रीय संगीत: उत्तर भारत (विशेष रूप से उत्तर प्रदेश)।
- कथक की शास्त्रीय शैली को 20वीं शताब्दी में लेडी लीला सोखे द्वारा पुनर्जीवित किया गया।
- हिंदुस्तानी या उत्तर भारतीय संगीत से संबद्ध शास्त्रीय नृत्य की एक मात्र शैली।

प्रस्तुति:

- भाव-भंगिमाओं तथा संगीत के साथ महाकाव्यों से ली गई कविताओं की प्रस्तुति।
- पद-चालनों पर अधिक जोर। इसमें अभिव्यक्ति तथा लालित्य को अधिक महत्त्व दिया जाता है।
- प्राय: एकल प्रस्तुति।

कथक प्रस्तुति के घटक

- आनंद: परिचयात्मक प्रस्तुति।
- ठाट: हल्की किंतु अलग-अलग प्रकार की हरकतें।
- तोड़ा तथा टुकड़ा: तीव्र लय के लघु अंश।
- जुगलबंदी: तबलावादक तथा नर्तक के बीच प्रतिस्पर्द्धात्मक खेल।
- पढ़ंत: नर्तक जटिल बोल का पाठ कर नृत्य द्वारा उनका प्रदर्शन करता है।
- तराना: समापन से पूर्व विशुद्ध लयात्मक संचालन।
- क्रमालय: समापनकारी अंश जिसमें जटिल तथा तीव्र पद-चालन का समावेश होता है।
- गत भाव: बिना किसी गायन के किया गया नृत्य।

प्रसिद्ध प्रतिपादक

- बिरजू महाराज, लच्छू महाराज, सितारा देवी, दमयंती जोशी

वाद्ययंत्र

- तबला, पखावज, सारंगी, सितार

और पढ़ें...

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/kathak-north-india